# भगवतीप्रसाद वाजपेयी की कहानियों में सामंजस्य भाव

**डॉ. राम मनोहर उपाध्याय**
ऐसोसिएट प्रोफेसर : हिन्दी विभाग
आईसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

**शोध सारांश**

*आधुनिक युग में कहानीकारों एवं उनकी कहानियों की दृष्टि सामंजस्य भाववादी अधिक है। कुछ कहानीकार आधुनिक मनोविज्ञान से प्रभावित होकर मनुष्य के आंतरिक जगत के चित्रण की ओर उन्मुख हुए हैं। इन कहानीकारों ने मानव मन की गुत्थियों का सूक्ष्म उद्घाटन किया है। कुछ भौतिकवादी दर्शन से प्रभावित होकर वर्ग संघर्ष का चित्रण करते हुए साम्यवादी विचारों का पोषण करते हैं। कुछ कहानीकारों ने काम–वासना को मूल प्रवृत्ति स्वीकारते हुए मनुष्य की क्रियाओं और उसकी विकृतियों का चित्रण किया है। इससे हटकर भगवतीप्रसाद वाजपेयी के कथा साहित्य के शिल्प के द्वारा सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों का सामंजस्य भाववादी चित्रण उन्होंने किया है। उनकी सूक्ष्म दृष्टि विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों का सामंजस्यपूर्ण चित्रण और वर्णन उपस्थित करते हैं। बकौल डॉ. रमेश सक्सेना इसमें सामाजिक रीतिरिवाज, व्यक्तिगत वेशभूषा और स्थानीय विशेषताओं का सामंजस्यपूर्ण चित्रण होता है एवं दूसरे प्राकृतिक के अन्तर्गत प्रकृति का विभिन्न प्रकार के चित्रण भी इसी भाव से होते हैं। कभी–कभी प्रकृति मानव भावनाओं के रंग में रंगी हुई चित्रित होती है, कभी वह विपरीत आचरण करती है और कभी वह मानव समाज को प्रेरणा प्रदान करती है। इस प्रकार सामंजस्यवादी वातावरण और देशकाल वाजपेयी की कहानियों का एक आवश्यक तत्व है। इनका चित्रण भी संतुलित और सानुपातिक ढंग से किया है। देशकाल का चित्रण सदैव कथानक के स्पष्टीकरण एवं चरित्र विकास का साधन होना चाहिए। आवश्यक वर्णनों से कहानियों के कथानक का प्रवाह और सामंजस्यपूर्ण होने से सरसता आ जाती है। प्रस्तुत आलेख में भगवती प्रसाद वाजपेयी की कहानियों में सामंजस्य भाव का आकलन किया गया है।*

## I भूमिका

भगवतीप्रसाद वाजपेयी के कहानियों का उद्देश्य समाज चित्रण और सामंजस्यपूर्ण शिक्षा देना है। वह न तो पाठक को उपदेश देना चाहते हैं और न उसके मनोरंजन मात्र को ही अपना धर्म समझते हैं। उन्होंने यह अनुभव किया कि कहानी अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम है। अतः वह अपनी कहानियों में व्यापक जीवन और उसकी परिस्थतियों को सूक्ष्म रूप से ग्रहण करते हुए अपने दृष्टिकोण को अधिक सशक्त बनाते हैं। वाजपेयी के पास कोई एक विषय होता था, जिसके चित्रण में उनकी सारी दृष्टि केन्द्रित रहती थी। कहानियों में प्रायः ऐसे अनेक उदाहरण उद्धत किये जा सकते हैं। कहानी के बीच में वाजपेयी का हस्तक्षेप पाठकों को अच्छा लगता है। जब वाजपेयी बीच में उपस्थित होकर यह बताने लगते हैं कि अमुक ने यह सोचा अथवा अमुक ने यह कहा तो शिल्प के द्वारा कलात्मकता आ जाती है। वाजपेयी की कहानियों में अधिकांश स्थलों पर ऐसे शिल्प की योजना हुई है। शैली का स्वरूप वाजपेयी के कथा साहित्य में देखा जा सकता है। कहानियों में महसूस किया जा सकता है। ऐसी कई कहानियों की रचना हुई है जिनमें शिल्प का प्रयोग हुआ।

## II भगवती प्रसाद वाजपेयी की कहानियों में सामंजस्य भाव का विश्लेषण

कहानियों की भाषा में सूक्ष्मता और सामंजस्य भाव सबको लेकर चलते हैं। भगवतीप्रसाद वाजपेयी की भाषा इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। उनकी भाषा में संयम और भाव समान है। कुछ कहानियों की भाषा व्यंजनापूर्ण है और वह एक रस हो जाती है। समाज की अनुभूतियों को सम्प्रेषित करने में वाजपेयी की भाषा समर्थ है। भगवतीप्रसाद वाजपेयी के कथा साहित्य में शिल्प एक आवश्यक तत्व है। इसी के कारण कहानियों में सजीवता और स्वाभाविकता आती है। "सामाजिक कहानियों में तो वातावरण एवं शिल्प का चित्रण अनिवार्य हो जाता है और इन कहानियों में समाज के चित्रण में लेखक ने पूर्ण सतर्कता से काम लिया है। सामाजिक कहानियों में सामंजस्य भाव और स्वाभाविकता लाने के लिए स्थानीय शैली का प्रयोग हुआ है।" [1]

शिल्प कहानियों का एक प्रमुख तत्व है इसके द्वारा भगवतीप्रसाद वाजपेयी ने कथा का विकास करने और पात्रों के चरित्र की व्याख्या करने का प्रयोजन किया है। इसके अतिरिक्त शिल्प के माध्यम से वाजपेयी ने अपने विचार भी स्पष्ट किये हैं। शिल्प का सबसे बड़ा गुण होता है, उसकी सोद्देश्यता। कहानियों की सामंजस्य सार्थकता है क्यों कि वह कथा का विकास करने, चरित्र चित्रण प्रस्तुत करने हेतु वाजपेयी के विचारों को व्यक्त करने का प्रयोजन सिद्ध होता है। सोद्देश्य सामंजस्य पात्रानुसार और प्रसंगानुसार होना चाहिए। पात्रों के स्वभाव और उनकी परिस्थिति के अनुसार उनके शिल्प प्रयोग होते हैं। एक पढ़े लिखे और एक ग्रामीण पात्र एवं एक मुसलमान और एक हिन्दू पात्र दोनों के विचारों में भिन्नता होनी चाहिए। "इसी प्रकार प्रेम और समाज के प्रसंगों में शिल्प भिन्न प्रकार के होंगे। रोचकता भी शिल्प का एक प्रमुख गुण है। रोचकता के लिए शिल्प प्रयोग होना आवश्यक है।" [2] वाजपेयी की कहानियों में सामाजिक सिद्धान्तों की व्याख्या भी हुई है। वाजपेयी की कहानियों में यह महत्ता प्राप्त होती है। उनके विचार कहीं–कहीं व्याख्यान बन जाते हैं और सामान्य होने के कारण तुरन्त समझ में आते हैं। वाजपेयी की

कहानियों में पात्रों की एक–एक पंक्ति परिस्थितियों से प्रेरित होकर कहलाई गई तभी उनमें जीवन का रस सामजंस्यपूर्ण मिलता है।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी के कहानियों में कुछ पात्र मूक और जड़ हैं। उनमें क्रियाओं की ही प्रधानता है। कुछ कहानियों में वर्णात्मक शैली में सामंजस्य होने के कारण वर्णन के ही द्वारा कथानक और चरित्र का विकास हुआ है। कथानक के विकास और चरित्र–चित्रण में कला का उपयोग हुआ है। वाजपेयी ने अपनी कहानियों में शिल्प को महत्व दिया है। वे शिल्प के द्वारा कथा को आगे बढ़ाते हैं और पात्रों के चरित्र का भी परिचय देते हैं। कहानियों में शिल्प का महत्व इसलिए है कि उसमें कलात्मकता लाने का प्रयास वाजपेयी ने किया है।

"दिवाकर के शोषण के विरूद्ध कई बार उसके मन में विद्रोह भी उमड़ता है लेकिन वह अन्त तक निष्क्रिय बना रहता है। परिस्थितियों का दास बनकर सब कुछ सहता चलता है। इस दृष्टि से रमन काफी जागरूक है। वह भिन्न है। अपनी समस्याओं और परिस्थितियों से संघर्ष अवश्य करता है। किन्तु वह उनके प्रति डट कर विद्रोह नहीं कर पाता। रमन विद्रोह करने के लिए पूर्ण तैयार है। वह अधिक सचेत भी है और विद्रोही भी। " [3] वाजपेयी की कहानियों के नायक बहुत कुछ सोचते समझते हैं। नायक नारायण एक छोटे से कस्बे का एक साधारण शिक्षक है, जिसके मन में कोई महत्वाकांक्षा नहीं है। किन्तु उसके भीतर आत्मसम्मान, और आदर्श है। सामाजिक परिस्थितियॉ उसे पराजित कर देती है, लेकिन वह झुकता नहीं। अपनी मान्यताओं के प्रति उसकी आस्था अटूट है। असाधारण से असाधारण व्यक्तियों और परिस्थितियों के सम्पर्क में आकर भी वह अंत तक साधारण और सामान्य ही बना रहता है। उसकी पत्नी भी परिवार के अनेक कष्टों को सहते हुए भी अन्त तक निरीह बनी रहती है।" [4] परन्तु आधुनिक कहानियों में बढ़ते हुए मतवादी आग्रहों को देखते हुए कह सकते हैं कि सिद्धान्तों के आधार पर पात्रों का निरूपण उपयुक्त सिद्ध होगा। वस्तुतः प्रवृत्ति ही पात्रों में प्राण–प्रतिष्ठा कर सकती है। पात्रों में एक सजीव व्यक्तित्व और सार्थकता है। यही आत्मान्वेषण की प्रवृत्ति वाजपेयी की आत्मापलब्धि में भी सहायक हुई है, जो उपन्यास का सबसे महान् सत्य है। उपन्यास के पात्रों के सम्बंध में एक समस्या उनके तटस्थ विश्लेषण में है। कहानियों में सफल और व्यक्तित्वपूर्ण पात्रों का निर्माण वहां होता है, जहां कलाकार उन पात्रों में अपने को सप्रयास नहीं प्रवेश करते। अतः वह पात्रों का स्वाभाविक विकास उन्हीं के परिवेश में सामंजस्यपूर्ण करते हैं। निस्संदेह वाजपेयी का ध्यान पात्रों के चरित्र–विश्लेषण पर ही केन्द्रित है। उनकी कहानियों में सजीव और सबल चरित्रों की प्रतिष्ठा हुई है। उदाहरणतः–"समाज सेवा की यह भावना दिनेश में चरम विकसित रूप में है और मन्ना और देवी में भी है। देवी कहती है : कह दो–समाज एवं देश सेवा हम करते रहेंगे।"[5]

भगवतीप्रसाद वाजपेयी की कहानियों के कुछ पात्र समाज सेवी है जो सामंजस्य भाव को लेकर चलते हैं। अपने दायित्व का निर्वाह वह अपने परिश्रम और शक्ति से करते हैं किन्तु वह श्रम शक्ति का महत्व समझते हैं। वाजपेयी के कथा साहित्य में अनेक पात्र ऐसे हैं। इस प्रकार स्पष्ट हे कि वाजपेयी की कहानियों में चरित्रों के वाह्य चित्रण की अपेक्षा उनके आंतरिक विश्लेषण को प्रधानता मिली है। इन चरित्रों के सामान्य विशेषताओं का उल्लेख करके वाजपेयी उनके असाधारण क्रिया–व्यापारों द्वारा उनकी विशिष्टता प्रतिपादित करते हैं। आधुनिक समाज विज्ञान ने यह भी सिद्ध किया है कि मनुष्य के सामाजिक व्यक्तित्व के कई भाग हो सकते हैं। और इनमें से एक भाग दूसरे से परिचित रहकर सेवा कार्य कर सकता है।" [6] वाजपेयी की कहानियों में पात्रों के इस प्रकार के व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण चित्रण हुआ है। कहानियों के पात्रों में इस प्रकार के व्यक्तित्व देखे जा सकते हैं।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी के कथा साहित्य में चरित्रों का व्यक्तित्व निर्माण प्रमुखतः इन्हीं सामंजस्य धरातलों पर हुआ है। पहला समाज विज्ञान के धरातल से और दूसरा सामाजिक धरातल से। पहले प्रकार के चरित्रों में समान भावना का स्वर प्रधान है। ये पात्र समाज सेवा और संघर्ष करते हैं। इन कहानियों में विश्लेषण में आधुनिक समाज विज्ञान का विशेष सहारा लिया गया है। दूसरे प्रकार के चरित्रों में समाज का संघर्ष की भावना और सामाजिक सक्रियता प्राप्त होती है। पात्रों में सामाजिक मान्यताओं के प्रति कहानियों में संघर्ष और समाज चरित्र अधिक स्वाभाविक सजीव और प्रभावपूर्ण है।

## III निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भगवतीप्रसाद वाजपेयी की कहानियों में साहित्य और परम्परा के प्रति संघर्ष का भाव है। इन कहानियों में सुधार जीवन–मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया गया है। वाजपेयी की दृष्टि आदर्शवादी और नैतिक रही है। भौतिकवादी दर्शन का प्रभाव उन पर नहीं पड़ा है। अतः कहानियों में समाज तथा सेवा दृष्टि लक्षित होती है। कहानियों में आदर्श धर्म, संघर्ष प्रधान है। कहानियॉ समाज की ओर उन्मुख हैं। व्यक्ति के अन्तर्जगत के चित्रण में सामंजस्यभाव अधिक प्रवृत्त हुए हैं। इनमें सामाजिक अन्याय की पकड़ भी पर्याप्त गहरी है। कतिपय विशेषताओं के साथ कहानियों की सीमायें भी स्पष्ट है। समाज के नाम पर जीवन की अनेक विकृतियों का भी चित्रण हुआ है। कहानियों में सैद्धान्तिक आग्रह प्रधान हो उठे हैं। आधुनिक समाज विज्ञान और समाज की ओर हाथ बढ़ाने में वाजपेयी को प्रायः आस्था ही हाथ लगी है। इस प्रकार उपलब्धियां और सीमायें स्पष्ट है। शिल्प के क्षेत्र में कथानक–संकोच, चरित्रों का गहन विश्लेषण तथा पद्धतियों और शैलियों का प्रयोग–आदि विशेषताएं विशेष हैं।

## संदर्भ

[1] डॉ. सुनील यादव : कहानियों में शिल्प चित्रण, पृ. 129

[2] डॉ. देवेश ठाकुर : कहानी साहित्य, पृ. 119

[3] डॉ. रंजना प्रसाद : भाषा एवं शिल्प, पृ. 200

[4] भगवतीप्रसाद वाजपेयी पुष्प लता, पृ. 113

[5] भगवतीप्रसाद वाज़पेयी : हिलोर, पृ. 182

[6] लक्ष्मी खाम्बरा : कहानियों में आधुनिक समाज, पृ. 201